ओ कान्हा आ रे | By Mukesh Bagda |

ओ कान्हा आ रे
तू आजा मोहन गिरधारी,
की तरसे गुजरिया सारी,
पुकारे राधा बेचारी,
ओ कान्हा आ रे।।

सुना पड़ा है मधुबन सारा,
तेरे बिना ओ कन्हाई,
आजा सुना जमना तट,
तुझ बिन सुना है पनघट,
सुना सुना गुजरियों का मन,
ओ कान्हा आ रे।।

यमुना किनारे गुजरियों के,
कपड़ों को कौन चुराए,
सुनी ग्वालों की टोली,
सुने तेरे हमजोली,
सुने सुने हैं सबके नयन,
ओ कान्हा आ रे।।

अपना बना के क्यों बिसराया,
ओ निर्मोही बता जा,
आजा माखन खा ले रे,
हमको लाख सता ले रे,
'हर्ष' सब कुछ करेंगे सहन,
ओ कान्हा आ रे।।

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%93-%e0%a4%95%e0%a4%be%e0%a4%a8%e0%a5%8d%e0%a4%b9%e0%a4%be-%e0%a4%86-%e0%a4%b0%e0%a5%87-by-mukesh-bagda/